62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 645 Participant Code: 112

हमारी संस्कृती और खेती

हमारी केरल में हमारी संस्कार अलग हैं। सभी लोगों को खेत पसंत हैं। हम केरल वासियों अपने संस्कार को परिवार करता हैं। आज के लोगों को खेत पसंत हैं पर खेत पर काम करना अधिक पसंत नहीं।

हम केरल पर अधिक खेत हैं। वे हम लोगों का संस्कृति मान गया हैं। हमारे संस्कार अलग हैं पर अब हैं अलग पुराने समय में सभी लोग खेत पर काम करके घर देखते थे। पर अभ भी वैसा हैं। कुछ और लोग अब खेत का काम नहीं कर रहा हैं। वो अन्य जगह पर जाकर पैसे बढ़ाने का काम कर रहा हैं। इसका क्या हाल हैं।

हमारी संस्कृती, हमारी खेत हैं। उससे मिलते अच्छी फल और इनसे बनाने हुए खाना हैं। वो हमारी जीवन हैं। हमको वो खेत का खयाल रखना चाहिए। किसान को मानना चाहिए।

..... आज कल के बच्चों को उसका माता-पिता ने खेत पर काम करने को मना करता है। पता नहीं क्यों। पर खेत नहीं तो किसान नहीं। हम सब अब पैसे बनाने के लिए कई दूर जा रहा है। कोई और काम करके पैसे बनाते हैं। इसलिए आज कल हमारे जगह पर खेत कम हो चुकी है। खेत कम होने के कारण हमारे संस्कृति भी कम होने लग रहा है। आज का लोगों को खेत पर काम करना अब पसंद नहीं है। और अब खेत करने से किसान को लाभ भी न मिल रहा है।.....

..... हमारी संस्कृति को खयाल रखना और मानव को अभिमान केलिए खेत होने ही चाहिए। पर अब सभी लोगों को उसका खयाल रखने का समय नहीं। कोई भी उसके लिए मेहनत भी न कर रहा है। सबको अपना घर मुख्य है। वो अपने खुशी को प्रधान करता है। हम सब अब हमारे खुशी के पीछे है। संस्कार का पीछा नहीं। पता नहीं इस दुनिया

के बच्चों बड़े हो जाने से हमारी यह संस्कृति का क्या हालत होगा। अब हमें कुछ करना चाहिए। खेत विस्तार बनाकर उसे बढ़ना चाहिए। क्योंकि खेत नहीं तो अन्न नहीं। खाना पकाने को अन्न चाहिए। अन्न खेत पर मिलते हैं। इसलिए हमें खेत का परिवार करना चाहिए।

खेत से अन्न मिलता है। इसलिए खेत ~~हमारे केरल~~ और इन्दिया का संस्कृति बन चुका है। खेत पर काम करनेवालों को हम कुछ सहाय करना चाहिए। उसे मदद करने से हम एक अच्छी बात का एक अंश बन चुका होगा।

खेत पर काम करना एक बुरा बात नहीं है। वो एक अच्छी बात है। तो उस खेत पर काम करने केलिए कोई फरक नहीं पड़ता। हमारी संस्कार खेत और खेत पर काम करनेवाला किसान है। तो इसलिए हमारे संस्कार का खयाल रखना हमारी एक जिम्मदारी है।

..... हमारी जिम्मदारी को मानना ही चाहिए। खेत पर हमारी संस्कृति का एक अंग है। जिसके पास खेत हो वो अब महान बन सकता है।

..... आज कल का हमारी संस्कार खेत पर जम्मा हुआ है। खेत पर काम करने को बुरा न मानना चाहिए। वो एक अच्छी बात है। खेत पर हमको अन्न मिलता है। पर वो एक छोटी बात नहीं है। हमारे संस्कार खेत पर काम करनेका ही है।

..... पुरानी समय पर जिसके पास खेत है वो जन्मी होगा। वो जन्मी के पीछे बहुत सारा किसान और गरीब लोग एक समय का अन्न के लिए काम करता था। पर पुरानी समय का जन्मी पैसे इस खेत पर मिलनेवाला अन्न से बनाता था। इसलिए उस अन्न से एक भाग वो लोगों को देते था। पर महीनों चलने तक कई से, कई जगह पर अन्न नहीं मिल रहा था। और वो अन्न को जन्मी गरीब लोगों

को न देते थे। उस वक्त हमारे पूरवीक लोगों ने बहुत कठिनाईयों सहकर काम करते थे। उसका अच्छे काम खेत पर काम करने ही था। इसलिए खेत हमारे संस्कार बना।

खेत से अन्न मिलने से हमारे भूख बंद हो जाता है। अन्न से बनानेवाला खाना को खा जाने से हमारे भूख शाँत हो जाता है। खूब मज़ी करने को खाना अच्छा है। भूख शाँत होने से हमारी मन भी शांत होता है। अच्छे शानतार मन के लिए खाना एक अवश्य खडना है। इसलिए धाना हमारा अवश्य चीज़ बन चुका है।

अवश्य पर मिलनेवाला जो खाने को हम बरबाद न करना चाहिए। क्योंकि कुछ लोग, और कुछ ज्यादा लोग अवश्य खाना न मिलने से भूख के कारण मर गया है। छोटी बच्चों भी कैसे मर गया है। तो खाना ठीक से खाना चाहिए। उसे बरबाद न करना चाहिए। अवश्य खाना हमें ठीक

से मिलते हैं। पर सभी लोगों को ऐसा नहीं है। इसलिए हमारे पास का खाना को भी ठीक से उपयोग करना चाहिए।

अलग-अलग संस्कार पर हमारे संस्कृति खेत बन चुकी है। क्योंकि हम खेत को एक अवश्य खड़ने से देखते हैं। और उसे खयाल रखना है। हमको खेत को अच्छे तरह खयाल रखना चाहिए। खेत को बरबाद भी न करना चाहिए। खेत नहीं तो हम भी नहीं है। पता है न खेत से अन्न मिलती है। खेत नहीं तो हमारी संस्कार भी नहीं है। खेत पर हमारी संस्कृति है। हरित मनोहर है खेत का जगह सब।

आज कल कुछ लोग, खेत का मूल्य न जानने वाले लोगों ने खेत करने को उपयोग करने का वो जगह को बरबाद करके उस जगह पर बड़े-बड़े फाक्टरि और बिलडिंग बनाता है। वो सब गलत बात है। हमें ऐसे करनेवालों को अच्छी से सबक

सिखाना चाहिए। क्योंकि वो लोगों को खेत और हमारी संस्कृति का मुल्य नहीं जानता है। वो सब हमारे अच्छे खेत को बरबाद करता है। उसे हम मानना भी नही चाहिए। वो सब गलत करता है। इसलिए उन्होने ये सब करता है। हमें वो गलत काम करने-वालों को रोकना चाहिए।

खेत को बरबाद करनेवालों को अच्छे से इस बातों का ध्यान देना चाहिए। क्योंकि वो सब खेत और हमारी संस्कृति या संस्कार के बारें में समझ सके। हम सब भारतीय है। इस भारत पर अन्न मिलती है तो इस अन्न उत्पादन करनेवाला खेत को अच्छी तरह खयाल रखना चाहिए और खेत पर काम करनेवालों का साथ काम करना चाहिए। वैसा करने से हम खेत को कुछ और ध्यान दे सकता है। हमारे भारत पर सभी लोगों को खेत पर ध्यान देना चाहिए।

हम सब भारतीय हैं। इस भारत पर अन्न मिलने को एक ही मार्ग है वो है खेत। खेत पर काम करनेवाला किसान कई दूसरे से अलग है। हमसे भी अलग है। हम सड़क पर बिना चप्पल से कैसा नहीं चलता। पर किसान लोगों ने बिना चप्पल से ~~भी~~ पैदल चल सकता है। किसान सुबह से शाम तक खेत पर वो गरम सूरज धूप से काम करता है। अपना घर देखने को या हमारे संस्कृति को खयाल रखने को।

हम सब लोग कैसा खेत पर काम न करते हैं। कैसा सूरज धुप का गरम आसमान से गिरती वो बारीष धुप का महसूस किया न होगा पर ये सब एक किसान किया है। सिर्फ हमारे लिए। हमारे संस्कृति के लिए; हमारे भूख के लिए। हम सबको दाना देने के लिए भी ये सब एक किसान महसूस किया है।

हमारी भारत पर सभ लोग अब किसान का महत्व ध्यान दिया होगा। हमारे खेत का महत्व ध्यान दिया होगा। हम सभी लोगों का संस्कृत खेत और खेत पर काम करने का जिम्मदारी है। हम सबका जिम्मदारी है एक खेत पर अच्छी किसान बनकर काम करना। कुछ और भी काम करो पर एक अच्छी किसान बनना ही अच्छी बात है।

सिर्फ पैसे बनाने के लिए नहीं। एक अच्छी भारतीय बनकर हमारी संस्कृती का महत्व को खयाल रखने केलिए भी हमें खेत पर काम करना चाहिए।

अलग-अलग संस्कार पर हमारी संस्कार खेत बन चुका है। क्योंकि हम सब भारतीय है। हमें खेत का महत्व और खेत पर काम करनेवाला किसान का महत्व भी जानना चाहिए। क्योंकि ये सब हमारा जिम्मदारी है।

खेत पर काम करनेवालों और खेत पर काम करने को बुरा मा मानो। क्योंकि हमें खाना खाने को अन्न इस खेत से मिलती है।

अन्न को बरबाद करकर उस खेत के जगह पर फाक्टरी या बिलटिंग बनाना का बात बहुत बुरा मानता है। क्योंकि उस जगह खसाना के समान है। सभी लोग खसाना को टूढकर आगे जाना है। पर हम सब उसे सामन देखते से फी उसे न पहचान करता है।

हमें हमारे भारत पर बनानेवाला जो खेत का जगह को कोई अधिक काम करने को नही, धाना बनाने का इस्तिमार करना चाहिए।

खेत से खाना मिलता है। वो खेत ही हमारी संस्कृति है। क्योंकि हम सब भारतीय है और भारत पर जीवन बितानें वाला आम जनता है।

हम सब भारतीय हैं। अलग-अलग संस्कार पर हमारी संस्कृति खेत बन चुकी है। इसलिए हमें वो खेत को अच्छी से खयाल रखना चाहिए।

हमारी खेत का जगह खसाने का समान है क्योंकि वो जगह धाना बनाने का जगह है।

हम खाना खाते हैं। वो खाने पकाने का धाना खेत से बनाता है। वो खेत हमारी संस्कृति बन चुका है।

हमारी संस्कृति को खयाल रखना हमारी जिम्मदारी है। क्योंकि हम सब भारतीय हैं। भारतीय को संस्कृति बहुत बड़े अंगीकार मानते हैं। इसलिए हमारे संस्कार खेत को हमें खयाल रखना चाहिए।

याद करो; अलग-अलग संस्कार पर हमारी संस्कारी खेत बन चुकी है। वो खेत हमारी अन्न है। खसाने के समान खेत जगह से मिलने वाला अन्न।